सम्पादक के नाम

21 बच्चे हमेशा के लिए सो गए फिर भी हम नहीं जागेंगे

कुछ विषय ऐसे होते हैं जिनपर लिखना खुद की आत्मा पर कुफ्र तोड़ने जैसा है, सूरत की बिल्डिंग में आग...21 बच्चों की मौत...आग और घुटन से घबराए बच्चों को इससे भयावह वीडियो आज तक नहीं देखा....इससे ज्यादा छलनी मन और आत्मा आज तक नहीं हुई....फिर भी लिखूंगी...क्योंकि हम सब गलत हैं, सारे कुएं में भांग पड़ी हुई है। हमने किताबी ज्ञान में ठूंस दिया बच्चों को नहीं सिखा पाए लाइफ स्किल। नहीं सिखा पाए डर पर काबू रख शांत मन से काम करना।

मम्मा डर लग रहा है...एग्जाम के लिए सब याद किया था लेकिन एग्जाम हॉल में जाकर भूल गया...कुछ याद ही नहीं आ रहा था। पांव नम थे...हाथों में पसीना था...आप दो मिनिट उसे दुलारते हैं...बहलाने की नाकाम कोशिश करते हैं फिर पढ़ लो- पढ़ लो- पढ़ लो की रट लगाते हैं। सुबह 8 घंटे स्कूल में पढ़कर आए बच्चे को फिर 4-5 घंटे की कोचिंग भेज देते हैं। जिंदगी की दौड़ का घोड़ा बनाने के लिए, असलियत में हम उन्हें चूहादौड़ का एक चूहा बना रहे हैं। नहीं सिखा पा रहे जीने का तरीका- खुश रहने का मंत्र...साथ ही नहीं सिखा पा रहे लाइफ स्किल। विपरीत परिस्थितियों में धैर्य और शांतचित्त होकर जीवन जीने की कला नहीं सिखा पा रहे हैं ना और इसके लिए सिर्फ और सिर्फ हम पालक और हमारा समाज जिम्मेदार है।

आयुष को पांच साल की उम्र में मैं न्यूजीलैंड ले गई थी...9 साल की उम्र में वापस इंडिया ले आई थी...वहां उसे नर्सरी क्लास से फस्टटेड से लेकर आग लगने पर कैसे खुद का बचाव करें...फीलिंग सेफ फीलिंग स्पेशल (चाइल्ड एब्यूसमेंट), पानी में डूब रहे हो तो कैसे खुद को ज्यादा से ज्यादा देर तक जीवित और डूबने से बचाया जा सके.... जैसे विषय हर साल पढ़ाए जाते थे। फायरफाइटिंग से जुड़े कर्मचारी और अधिकारी हर माह स्कूल आते थे। बच्चों को सिखाया जाता था विपरीत परिस्थितियों में डर पर काबू रखते हुए कैसे एक्ट किया जाए। ह्यूमन चेन बनाकर कैसे एक-दूसरे की मदद की जाए.....हेल्पिंग हेंड से लेकर खुद पर काबू रखना ताकि मदद पहुंचने तक आप खुद को बचाए रखें....

हम नहीं सिखा पा रहे यह सब....नहीं दे पा रहे बच्चों को लाइफ स्किल..विपरीत परिस्थितियों से बचना....कल की ही घटना देखिए...हमारे बच्चे नहीं जानते थे कि भीषण आग लगने पर वे कैसे अपनी और अपने दोस्तों की जान बचाएं....नहीं सीखा हमारे बच्चों ने थ्री- प्रतिशत का रूल (गेट डाउन, गेट क्राउल, गेट आऊट) जो 3 साल की उम्र से न्यूजीलैंड में बच्चों को सिखाया जाता है, आग लगे तो सबसे पहले झुक जाएं...आग हमेशा ऊपर की ओर फैलती है। गेट क्राउल...घुटनों के बल चले...गेट आऊट...वो विंडों या दरवाजा दिमाग में खोजे जिससे बाहर जा सकते हैं, उसी तरफ आगे बढ़े, जैसा कुछ बच्चों ने किया, खिड़की देख कर कूद लगा दी... भले ही वे अभी हास्पिटल में हो लेकिन जिंदा जलने से बच गए। लेकिन यहां भी वे नहीं समझ पा रहे थे कि वे जो जींस पहने हैं...वह दुनिया के सबसे मजबूत कपड़ों में गिनी जाती है...कुछ जींस को आपस में जोड़कर रस्सी बनाई जा सकती है। नहीं सिखा पाए हम उन्हें कि उनके हाथ में स्कूटर-बाइक की जो चाबी है उसके रिंग की मदद से वे दो जींस को एक रस्सी में बदल सकते हैं...काफी सारी नॉट्स हैं जिन्हें बांधकर पर्वतारोही हिमालय पार कर जाते हैं फिर चोटी से उतरते भी हैं...वही कुछ नाट्स तो हमें स्कूलों में घरों में अपने बच्चों को सिखानी चाहिए। सूरत हादसे में बच्चे घबराकर कूद रहे थे...शायद थोड़े शांत मन से कूदते तो इंज्युरी कम होती। एक-एक कर वे बारी-बारी जंप कर सकते थे। उससे नीचे की भीड़ को भी बच्चों को कैच करने में आसानी होती। मल्टीपल इंज्युरी कम होती, हमारे अपने बच्चों को।

आज आपको मेरी बातों से लगेगा...ज्ञान बांट रही हूं...लेकिन कल के हादसे के वीडियो को बार-बार देखेंगे तो समझ में आएगा। एक शांतचित्त व्यक्ति ने बच्चों को बचाने की कोशिश की। वो दो बच्चों को बचा पाया लेकिन घबराई हुई लड़की खुद को संयत ना रख पाई और .... अच्छे से याद है, पापाजी कहते थे मोना कभी आग में फंस जाओ तो सबसे पहले अपने ऊपर के कपड़े उतार कर फेंक देना, मत सोचना कोई क्या कहेगा। क्योंकि ऊपर के कपड़ों में आग जल्दी पकड़ती है। जलने के बाद वह जिस्म से चिपक कर भीषण तकलीफ देते हैं...वैसे ही यदि पानी में डूब रही हो तो खुद को संयत करना...सांस रोकना...फिर कमर से नीचे के कपड़े उतार देना क्योंकि ये पानी के साथ मिलकर भारी हो जाते हैं, तुम्हें सिंक (डुबाना) करेंगे। जब जान पर बन आए तो लोग क्या कहेंगे कि चिंता मत करना...तुम क्या कर सकती हो सिर्फ यह सोचना।

जो बच्चे बच ना पाए, उनके माँ बाप का सोच कर दिल बैठा जा रहा है। मेरे एक सीनियर साथी ने बहुत पहले कहा था... बच्चा साइकिल लेकर स्कूल जाने लगा है जब तक वह घर वापस नहीं लौट आता...मन घबराता है। उस समय मैं उनकी बात समझ नहीं पाई थी...जब आयुष हुए तब समझ आया। आप दुनिया फतह करने का माद्दा रखते हो अपने बच्चे की खरोंच भी आपको असहनीय तकलीफ देती है...इस लेख का मतलब सिर्फ इतना ही है कि हम सब याद करे हिंदी पाठ्यपुस्तक की एक कहानी...जिसमें एक पंडित पोथियां लेकर नाव में चढ़ा था...वह नाविक को समझा रहा था च्अक्षर ज्ञान- ब्रह्म ज्ञानज्ञ ना होने के कारण वह भवसागर से तर नहीं सकता...उसके बाद जब बीच मझधार में उनकी नाव डूबने लगती है तो पंडित की पोथियां उन्हें बचा नहीं पाती। गरीब नाविक उन्हें डूबने से बचाता है, किनारे लगाता है।

हम भी अपने बच्चों को सिर्फ पंडित बनाने में लगे हैं....उन्हें पंडित के साथ नाविक भी बनाइए जो अपनी नाव और खुद का बचाव स्वयं कर सकें। सरकार से उम्मीद लगाना छोड़िए ... चार जांच बैठाकर, कुछ मुआवजे बांटकर मामला ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा। कुकुरमुत्ते की तरह उग आए कोचिंग संस्थान ना बदलेंगे। इस तरह के हादसे होते रहे हैं...आगे भी हो सकते हैं.... बचाव एक ही है हमें अपने बच्चों को जो लाइफ स्किल सिखानी है। आज रात ही बैठिए अपने बच्चों के साथ...उनके कैरियर को गूगल करते हैं ना...लाइफ स्किल को गूगल कीजिए। उनके साथ खुद भी समझिए विपरीत परिस्थितियों में धैर्य के साथ क्या-क्या किया जाए। याद रखिए जान है तो जहान है।

गणपति विसर्जन समय की एक घटना मुझे याद है। हमारी ही कॉलोनी के एक भईया डूब रहे थे...दूसरे ने उन्हें बाल से खींचकर बचा लिया...वे जो दूसरे थे ना उन्हें लाइफ स्किल आती थी....उन्होंने अपना किस्सा बताते हुए कहा था...कि डूबते हुए इंसान को बचाने में बचानेवाला भी डूब जाता है...क्योंकि उसे तैरना आता है बचाना नहीं...मुझे मेरे स्विमिंग टीचर ने सिखाया है कि कोई डूब रहा हो तो उसे खुद पर लदने ना दो...उसके बाल पकड़ो और घसीटकर बाहर लाने की कोशिश करो....यही तो छोटी-छोटी लाइफ स्किल हैं। काश के हम वीडियो बनाने और देखने के बजाय ये सब सीखें और बच्चों को सिखाएं। पर हम भेड़चाल वाले हैं अफसोस जताकर अगले हादसे का इंतज़ार करते हैं कि इसे भूल सकें.....अब तो अफसोस भी होता है हमें या बस रस्मन.....संदेह है।

- सरगम अग्रवाल

मैं कंधा देती स्मृति ईरानी को सम्मान नहीं दे सकती

मेरी नज़र में किसी भी व्यक्ति का सम्मान उसके संपूर्ण आचरण और व्यक्तित्व का होना चाहिए। महिला मित्रों ने इसे एक महिला का पुरुषों के डोमेन में घुसने को साहस बताया...पितृसत्ता में सेंध बताई।

मान लिया... नारीवाद का परचम लहरा दिया स्मृति ईरानी ने।

पर जरा ठहर कर सोचिये, क्या ये वाकई वैसा है जैसा आप सब देख रहे हैं?

इंसान होने की पहली शर्त है संवेदनशीलता...क्या आपने इसके पहले ये देखा है इस महिला में। रोहित वेमुल्ला याद है या भूल गए आप लोग??

ये यदि चाहती तो वो होनहार छात्र बच सकता था। उसी प्रकरण में पायल का नाम जुड़ा अभी अभी... गायब हुए उस बच्चे के लिए कभी एक आवाज़ इन्होंने नहीं लगाई,नज़ीब की माँ आज भी अपने बेटे के लिए इंसाफ माँगती दिल्ली के अदालतों के चक्कर काट रही है। कठुआ की बच्ची आप सब की आँखों से ओझल हो गयी..??

गीता याद है... इनकी पार्टी के ही एक मंत्री पर आरोप है न! जाने कितनी घटनाएँ हुई पिछले पाँच सालों में और जनता तड़प कर रह गयी पर सरकार में रहते इस महिला ने एक आवाज़ नहीं दी। अमेठी में हुई इस हत्या का मैं विरोध करती हूँ और मेरी पूरी संवेदना मृतक के परिवार के साथ है।उसे न्याय मिले, इसकी माँग चारों तरफ से उठनी चाहिए।

पर !इस परिस्थिति का राजनीतिक लाभ उठाने वाली इस महिला को मैं कभी सम्मान नहीं दूँगी। सभी साथियों से माफ़ी सहित!

-ऋतु तिवारी

अंग्रेजों ने ऐसे ही नहीं कहा था भारत को सांप और सपेरों का देश

हम सिनर्जी में व्यस्त हैं, अल्पसंख्यकों को पीटने में व्यस्त हैं, वनवासियों को जंगलों से बाहर करने में व्यस्त हैं और संविधान बदलने में व्यस्त हैं। इस बीच में देश पूरी तरह बदल चुका है, लोग बदल चुके हैं।

महेंद्र पाण्डेय, वरिष्ठ लेखक

मंदिरों में आपने देखा होगा वीवीआईपी या फिर पैसे देकर जानेवाले श्रद्धालु देर तक पूजा करते हैं और बार-बार भगवान् के चरणों में गिरकर पूजा करते हैं। हमारे प्रधानमंत्री जी भी कभी संसद की सीढ़ियों और कभी संविधान के सामने झुक-झुक कर मत्था टेकते हैं। संविधान का पालन करते-करते पांच साल बीत गए और अगले पांच साल के लिए गद्दी भी आ गयी। अब तो आश्चर्य होता है कि संसद में जो संविधान रखा गया है, उसमें जिल्द के नीचे कुछ है भी या नहीं।

आजकल प्रधानमंत्री जी लगभग हरेक संबोधन में सिनर्जी की खूब बातें करते हैं। हाल में ही उन्होंने कहा कि रणनीति और नीति की सिनर्जी से सरकार चलती है। उनका भाषण कुछ भी हो, पर सिनर्जी कहाँ से आती है, अब पता चल रहा है।

रणनीति और नीति के अलावा सिनर्जी में डंडे के जोर से मुस्लिम लोगों से राम का नाम बुलवाना, पिछड़ी जाति के डॉक्टर को जाति के नाम पर इस हद तक प्रताड़ित करना कि उसे आत्महत्या के अलावा कुछ और नजर ही नहीं आये, किसी रेहड़ी वाले को केवल इसलिए गोली मार देना क्योंकि वह एक मुस्लिम है, जिन राज्यों में बीजेपी की सरकार नहीं है, वहां की सरकारें अस्थिर करना, दूसरे दलों के विधायकों को 50-60 करोड़ रुपये देकर खरीदना जैसे विषय भी शामिल हैं।

चुनाव के दौरान ही और किसी ने नहीं बल्कि स्वयं प्रधानमंत्री ने टीएमसी के 40 विधायकों के बीजेपी में आने की बात कही थी। दरअसल यह टीएमसी विधायकों के लिए एक चुनावी आचार संहिता मुक्त सन्देश था कि बीजेपी में उनका स्वागत है, और अब वैसा ही हो रहा है। यही करिश्मा अब मध्य प्रदेश और राजस्थान में होने जा रहा है। राजनीति कोई सेवा तो है नहीं, विधायक तो पैसे की तरफ भागेंगे ही, और यह बार—बार बताया जाता है कि पैसा तो एक ही पार्टी के पास है।

दरअसल हमारे देश में कहानियां और काव्य बड़े प्रचलित रहे हैं। महाकाव्यों ने अनेक किरदार हमारे मानस पटल पर हमेशा के लिए अंकित कर दिए हैं। प्रधानमंत्री की कामयाबी का राज भी यही कहानियां हैं। कभी चाय बेचने वाला, कभी चौकीदार, कभी सेवक, तो कभी बहुत गरीब पृष्ठभूमि से आने वाला, कभी हिमालय पर तपस्या करने वाला तो कभी कुछ और। एक ऐसा नायक जो तमाम तूफानों से टकराने के बाद भी हरेक संघर्ष जीतता है और न चाहते हुए भी गद्दी पर बैठा दिया जाता है।

गद्दी पर बैठते ही देश में विकास की नदियाँ बहने लगती हैं, सारी समस्याएं खत्म हो जातीं हैं, खेत लहलहाने लगते हैं, रोजगार इतने पैदा होते हैं जितने देश में बेरोजगार भी न हों, सभी शत्रु निरीह हो जाते हैं। प्रधानमंत्री जी लोगों की नब्ज अच्छी तरह जानते हैं, इसीलिए अपने भूतकाल को जनता के भविष्य से जोड़ते हैं। जनता को भी यही सब्जबाग पसंद है। अंग्रेजों ने इसे ऐसे ही सांप और सपेरों का देश थोड़े ही कहा था।

जब तीन राज्यों में बीजेपी की हार हुई थी तब इंडिपेंडेंट में प्रकाशित एक खबर में बीजेपी की हार के चार प्रमुख कारण बताये गए थे। पहला कारण है, हिन्दू अतिवादी संगठनों की बढ़ती भूमिका, जो अपनी मर्जी से किसी की हत्या भी सरेआम कर सकते हैं और सरकार आँखे बंद कर उन्हें उग्रवादी संगठनों के नक्शे कदम पर चलने देती है। सरकार की नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने वाले पत्रकारों और सामाजिक संगठनों को खुले आम धमकियां देना, सरकार द्वारा देशद्रोही जैसा दंड देना और कई बार सरेआम उन्हें मार डालना भी एक बड़ा कारण है।

इसके अतिरिक्त केंद्र और बीजेपी शासित राज्यों द्वारा तमाम बड़े दावों के बाद भी बेरोजगारी की समस्या का विकराल होना,और किसानों के उठान के लिए जमीनी स्तर पर कुछ नहीं करना भी हार का बड़ा कारण है। अब जरा सोचिये, इसमें से कौन सी समस्या का हल मिल गया जो मोदी जी को इतना भारी बहुमत मिल गया।

प्रधानमंत्री जी तो विज्ञान के भी बड़े ज्ञाता हैं। पिछले चुनाव को जीतने पर डीएनए पर खूब भाषण दिया था। इस बार बनारस में अंकगणित को केमिस्ट्री से हरा दिया। पर मजाल है कि देश के किसी वैज्ञानिक की इस वक्तव्य पर कोई आवाज उठे। यह तुलना ठीक वैसे ही है जैसे मुंशी प्रेमचंद की तुलना कोई हरगोविंद खुराना से करने लगे। पीएमओ के भाषण में प्रधानमंत्री जी कह रहे थे, जैसे ए प्लस बी होल स्क्वायर को आगे लिखते हैं, प्लस 2एबी प्लस बी स्क्वयर, इसमें जो एक्स्ट्रा 2एबी हैज्राडार और बादलों के बाद पता नहीं क्यों मोदी जी गणित के पीछे पड़ गए हैं।

वैसे पार्टी का एजेंडा अब तक गौतम गंभीर समेत अनेक नए सांसदों को समझ में आ गया होगा, जिन्हें गलतफहमी रही होगी कि उनकी पार्टी गलत को गलत और सही को सही कहती होगी। अनुपम खेर ने तो सही को सही कहने को मीडिया के एक वर्ग में लोकप्रियता करार दिया है।

बीजेपी को कम से कम इतना पता है कि समस्या का समाधान उनके पास नहीं है, पर समस्या से जनता को गुमराह कैसे किया जा सकता है। इसका उदाहरण पुलवामा में मिल गया था, जहां 40 से अधिक जवान शहीद हो गए थे। पूरे देश में दो दिनों तक चर्चा चली, फिर एक दिन बादलों के बीच राडार से ओझल होकर बालाकोट में कुछ जहाज भेजे गए और फिर पुलवामा का दुख, दर्द और गुस्सा सब खत्म हो गया। देश की सुरक्षा चाक—चौबंद हो गयी। देश पूरी तरह से सुरक्षित हो गया और मोदी जी को बहुमत मिल गया। फिर कोई हमला होगा, फिर हम कुछ करेंगे और देश की सुरक्षा ऐसे ही चलेगी।

फिलहाल तो हम सिनर्जी में व्यस्त हैं, अल्पसंख्यकों को पीटने में व्यस्त हैं, वनवासियों को जंगलों से बाहर करने में व्यस्त हैं और संविधान बदलने में व्यस्त हैं। इस बीच में देश पूरी तरह बदल चुका है, लोग बदल चुके हैं। इस चुनाव ने इतना तो बता दिया है कि हमारा लोकतंत्र जिसे दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहा जाता है, खतरनाक तरीके से अयोग्य है।

धारा 370 के विरोध में थी कांग्रेस, सरदार पटेल ने जोड़ा इसे संविधान में...8 सबूत

अक्सर कश्मीर का नाम आते ही यह ध्यान में आता है कि वहां के सारे काम पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किए। लेकिन कम ही लोग इस तथ्य पर ध्यान दे पाते हैं कि भारतीय संविधान में धारा 370 जोड़ने का बड़ा काम सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया।

पीयूष बबेले

कश्मीर का मसला एक बार फिर उस स्तर तक पहुंच गया है, जब खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हालात पर नजर रखनी पड़ रही है। यहां सबको ध्यान होगा कि उनकी पार्टी जनसंघ के जमाने से कश्मीर में धारा 370 का विरोध करती आ रही है, हालांकि इस समय जम्मू-कश्मीर की सरकार में शामिल होने के बाद पार्टी खामोश है।

अक्सर कश्मीर का नाम आते ही यह ध्यान में आता है कि वहां के सारे काम पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किए। लेकिन कम ही लोग इस तथ्य पर ध्यान दे पाते हैं कि भारतीय संविधान में धारा 370 जोड़ने का बड़ा काम सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। उस समय पूरी कांग्रेस पार्टी कश्मीर को विशेष दर्जा देने के सख्त खिलाफ थी, लेकिन जब पंडित नेहरू अमेरिका में थे, तब पटेल ने पार्टी को कश्मीर के हालात समझाए और संविधान सभा में धारा 370 को स्वीकृत कराया। नेहरू ने पटेल की मृत्यु के बाद भी हमेशा उन्हें काम का श्रेय दिया। पटेल के मिशन धारा 370 का पूरा वर्णन उनके निजी सचिव और पटेल के पत्रों के संकलन के संपादक वी शंकर ने दिया है, इसके अलावा मुक्यमंत्रियों के लिखे पत्र में नेहरू भी इसका जिक्र करते हैं।

वी. शंकर के मुताबिक -

1. जम्मू-कश्मीर के संबंध में सरदार की एक उल्लेखनीय सिद्धि यह थी कि उन्होंने भारत के संविधान में अनुच्छेद-370 जुड़वाया, जो भारत के साथ काश्मीर राज्य के संबंधों की व्याख्या करता है।

2. इस सारे कार्य का संचालन गोपालस्वामी अय्यंगर ने शेख अब्दुल्ला और उनके मंत्रिमंडल के साथ सलाह-मशविरा करके पंडित नेहरू के समर्थन से किया. नेहरू उस समय अमेरिका में थे।

3. कांग्रेस पार्टी ने संविधान सभा में इस मसौदे का जोरदार, बल्कि हिंसक ढंग से विरोध भी किया क्योंकि यह अनुच्छेद कश्मीर राज्य को एक विशेष दर्जा प्राप्त करता था।

4. सिद्धांत की दृष्टि से कांग्रेस पार्टी की यह राय थी कि कश्मीर को उन्हीं मूलभूत व्यवस्थाओं अर्थात शर्तों के आधार पर संविधान को स्वीकार करना चाहिए, जिन शर्तों पर और राज्यों ने उसे स्वीकार किया।

5. सरदार नहीं चाहते थे कि नेहरू की अनुपस्थिति में ऐसा कुछ हो जिससे नेहरू को नीचा देखना पड़े। इसलिए नेहरू की अनुपस्थिति में सरदार ने कांग्रेस पार्टी को अपना रवैया बदलने के लिए समझाने का कार्य हाथ में लिया।

6. यह कार्य उन्होंने इतनी सफलता से किया कि संविधान-सभा में इस अनुच्छेद की बहुत चर्चा नहीं हुई और न इसका विरोध हुआ।

7. धारा 370 को संविधान में जुड़वाने के बाद सरदार ने नेहरू को 3 नवंबर 1949 को पत्र लिखकर इसके बारे में सूचित किया- 'काफी लंबी चर्चा के बाद में पार्टी (कांग्रेस) को सारे परिवर्तन स्वीकार करने के लिए समझा सका।'

8. नेहरूजी ने हमेशा इस कार्य के लिए सरदार पटेल को उचित श्रेय दिया। सरदार पटेल की मृत्यु के बाद जब श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने धारा 370 खत्म कराने के लिए आंदोलन छेड़ा, तब 25 जुलाई 1952 को मुख्यमंत्रियों को लिखे पत्र में नेहरू जी ने पटेल के कार्य की याद दिलाई, 'यह मामला 1949 में हमारे सामने तब आया था जब भारत के संविधान को अंतिम रूप दिया जा रहा था। सरदार पटेल तब इस मामले को अपने हाथ में लिया, उन्होंने हमारे संविधान में जम्मू और कश्मीर राज्य को विशेष, लेकिन ट्रांजिशनल दर्जा दिया। यह संविधान में धारा 370 के रूप में शामिल है।'

कश्मीर मुद्दे पर एकदम से आक्रामक रुख अपनाते समय कई लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि वे सरदार से बड़े राष्ट्रवादी नहीं हो सकते। अगर सरदार ने कश्मीर को खास दर्जा खुद अपने हाथों से दिया तो जरूर उस समय के हालात ऐसे रहे होंगे।